शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

अंक-५६ वर्ष-२०२६

माह फ़रवरी

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद का मासिक संकलन

वर्ष-२०२६
अंक-५६

माह- फ़रवरी २०२६

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
आनन्द मिश्रा, सुश्री ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक
सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी,

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

तकनीकी सहयोगी
जितेन्द्र कुमार, अनिल मौर्य, विकास शर्मा

विशेष सहयोगी
विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

'शिक्षण संवाद' फरवरी 2026

शुभकामना सन्देश

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका के फरवरी अंक के प्रकाशन पर समस्त शिक्षकों, शिक्षार्थियों एवं शिक्षा से जुड़े सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्रिका शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवाचारों, उत्कृष्ट प्रयासों एवं प्रेरणादायी गतिविधियों का सशक्त माध्यम है। इसके माध्यम से शिक्षकों को एक–दूसरे के अनुभवों से सीखने, नवीन शिक्षण विधियों को अपनाने तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्रेरणा मिलती है।

मुझे विश्वास है कि यह अंक भी पूर्व अंकों की भाँति ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी एवं उपयोगी सिद्ध होगा तथा शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सभी शिक्षकों से अपेक्षा है कि वे अपने विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करते हुए नवाचारों को बढ़ावा दें और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में अपना अमूल्य योगदान देते रहें।

आप सभी के उज्ज्वल भविष्य एवं सतत प्रगति की कामना के साथ।

वन्दना सिंह

(श्रीमती वन्दना सिंह)
(राज्य पुरस्कार विजेता)
उच्च प्राथमिक विद्यालय सोनाही
बाबाबेलखरनाथ धाम–प्रतापगढ़

सम्पादकीय

शिक्षण संवाद

फरवरी का महीना अपने भीतर एक विशेष ऊर्जा और संतुलन लेकर आता है। एक ओर आध्यात्मिक जागरण के बसन्तोत्सव और महाशिवरात्रि जैसे पर्व, तो दूसरी ओर विद्यार्थियों के लिए यह समय उनके परिश्रम, अनुशासन और लक्ष्य के प्रति समर्पण की परीक्षा का होता है। यह जीवन में आध्यात्म और कर्म, दोनों का संतुलन और सफलता का वास्तविक मार्ग है।

फरवरी माह केवल कुछ त्योहारों का माह ही नहीं है, बल्कि आत्ममंथन और आत्मसंयम का अवसर देने वाला माह भी है। जो शिव उपासना के रूप में हमें सिखाता है कि विषम परिस्थितियों में भी धैर्य, संयम और सकारात्मकता बनाए रखना ही सच्ची साधना है। शिव का "विषपान" हमें यह प्रेरणा देता है कि जीवन की कठिनाइयों को सहन कर, उन्हें अपने विकास का माध्यम बनाया जाए। विद्यार्थियों के लिए भी यह संदेश अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि परीक्षा की तैयारी के दौरान आने वाली चुनौतियाँ ही उनके व्यक्तित्व को सशक्त बनाती हैं। इसीलिए फरवरी माह विद्यार्थियों के लिए निर्णायक होता है। वार्षिक परीक्षाएँ, प्रतियोगी परीक्षाएँ तथा विभिन्न चयन प्रक्रियाएँ उनके भविष्य की दिशा निर्धारित करती हैं। ऐसे में केवल पाठ्य–पुस्तकों का अध्ययन ही पर्याप्त नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन, समय प्रबंधन और आत्मविश्वास भी उतने ही आवश्यक हैं। यदि विद्यार्थी शिव के ध्यान, एकाग्रता और अनुशासन को अपने जीवन में उतार लें, तो सफलता उनके लिए एक स्वाभाविक परिणाम बन सकती है।

इसीलिए "मिशन शिक्षण संवाद" का उद्देश्य केवल शिक्षा प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि शिक्षा के माध्यम से व्यक्तित्व निर्माण करना भी है। हम मानते हैं कि एक सच्चा विद्यार्थी वही है जो ज्ञान के साथ–साथ संस्कारों को

भी आत्मसात करे। इसलिए इस माह हम सभी शिक्षकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों से यह अपेक्षा करते हैं कि वे इस पवित्र अवसर का लाभ उठाते हुए अध्ययन के साथ–साथ आत्मचिंतन और आत्मविकास पर भी ध्यान दें क्योंकि सफलता केवल बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक शान्ति और संतुलन से प्राप्त होती है। इसलिए आइए हम सभी अपने कर्तव्यों का निष्ठापूर्वक पालन करते हुए, ज्ञान के मार्ग पर अग्रसर रहें और समाज के उत्थान में अपना योगदान देने के लिए आगे बढ़ते रहें।

धन्यवाद!

संपादक
मिशन शिक्षण संवाद

Index

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	9
विचार शक्ति	10-11
टी.एल.एम.संसार	12-13
बात महिला शिक्षकों की	14-16
सद विचार	17-18
प्रेरक–प्रसंग	19-20
कविता	21-22
दिवस विशेष	23
नवाचार	24-25
शैक्षिक तकनीकी	26-27
खेल जगत	28-29
योग विशेष	30-31
बाल फिल्म	32-33

मिशन गीत

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद हम सब की पहचान बन गया
शैक्षिक पत्रिका में स्थान दिलाने के लिए
शिक्षण संवाद बन गया
मिशन शिक्षण संवाद हम सब की पहचान बन गया

हर क्षेत्र में हमें निखारता हुआ दर्पण जैसा सम्मान बन गया
शिक्षक के उत्थान के लिए मिशन शिक्षण संवाद बन गया
मिशन शिक्षण संवाद हम सब की पहचान बन गया

मिशन से गहरा नाता हो गया
जिसम में जैसे जान बन गया
मिशन शिक्षण संवाद हम सब की पहचान बन गया

मिशन का हर एक सिपाही
मानवता के कल्याण का भागीदार बन गया
मिशन शिक्षण संवाद हम सब की पहचान बन गया

आजाद भारत के आजाद परिंदों का
आज की डेट में मान और सम्मान बन गया
मिशन शिक्षण संवाद हम सब की जान बन गया

मिशन शिक्षण संवाद ने हर शिक्षक को सम्मान दिलाया
शिक्षक की विचार शक्ति को मिशन ने जन–जन तक पहुंचा
सादर धन्यवाद मिशन के हर प्रहरी का
मासिक पत्रिका में स्थान दिलाया

रचनाकार
कल्पना गौतम (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय जगदीशपुर
देवमई,फतेहपुर

विचार शक्तिः

शिक्षक

शिक्षण संवाद

शिक्षक समाज का निर्माता होता है। वह केवल पाठ्य–पुस्तकों का ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सोच और संस्कारों का निर्माण भी करता है। इसलिए शिक्षक के भीतर मज़बूत विचार शक्ति होना अत्यंत आवश्यक है। विचार शक्ति का अर्थ है– सही–गलत का विवेक करना, समस्याओं का समाधान ढूँढना, नए–नए विचार उत्पन्न करना और परिस्थितियों के अनुसार उचित निर्णय लेना। जब किसी शिक्षक की विचार शक्ति सशक्त होती है, तब वह विद्यार्थियों को भी स्वतंत्र रूप से सोचने, समझने और प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करता है।

शिक्षक की विचार शक्ति का सबसे बड़ा प्रभाव कक्षा–शिक्षण में दिखाई देता है। एक विचारशील शिक्षक केवल रटाने पर ज़ोर नहीं देता, बल्कि बच्चों को विषय को समझने, तर्क करने और अपने विचार व्यक्त करने का अवसर देता है। वह पाठ को रोचक बनाने के लिए उदाहरण, कहानियाँ, गतिविधियाँ और नवाचार का प्रयोग करता है। इससे विद्यार्थियों की जिज्ञासा बढ़ती है और वे पढ़ाई को बोझ न समझकर आनंद के साथ सीखते हैं।

विचार शक्ति शिक्षकों को नई परिस्थितियों में सही निर्णय लेने में भी सहायता करती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में तेज़ी से परिवर्तन हो रहे हैं। नई तकनीक, नई शिक्षण विधियाँ और नई चुनौतियाँ सामने आ रही हैं। ऐसे समय में वही शिक्षक सफल हो सकता है जो अपने विचारों को खुला रखे, निरंतर सीखता रहे और शिक्षा को बेहतर बनाने के लिए नए प्रयोग करता रहे। जब शिक्षक रचनात्मक और सकारात्मक सोच अपनाता है, तो वह सीमित संसाधनों में भी बेहतर शिक्षा देने का मार्ग खोज लेता है।

इसके अतिरिक्त, शिक्षक की विचार शक्ति विद्यार्थियों के नैतिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एक विचारवान शिक्षक बच्चों को केवल परीक्षा की तैयारी नहीं कराता, बल्कि उन्हें जीवन के मूल्य– जैसे सत्य, अनुशासन, सहयोग, सहानुभूति और ज़िम्मेदारी भी सिखाता है। उसके विचार और आचरण ही बच्चों के लिए आदर्श बन जाते हैं। इसलिए कहा जाता है कि एक अच्छा शिक्षक अपने विचारों और व्यवहार से ही विद्यार्थियों के जीवन को दिशा देता है।

अंततः कहा जा सकता है कि विचार शक्ति किसी भी शिक्षक की सबसे बड़ी पूँजी होती है। जब शिक्षक गहराई से सोचता है, निरंतर सीखता है और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाता है, तब वह शिक्षा को प्रभावी, रोचक और प्रेरणादायक बना सकता है। ऐसे शिक्षक ही समाज को जागरूक, शिक्षित और संस्कारित नागरिक प्रदान करते हैं। इसलिए प्रत्येक शिक्षक को अपनी विचार शक्ति को विकसित करने के लिए अध्ययन, चिंतन, अनुभव और संवाद का सहारा लेना चाहिए। यही शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने का सबसे महत्वपूर्ण मार्ग है।

अंजू लता पटेल (स. अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय करसड़ा
वि.ख.– मझवां, जनपद – मीरजापुर

Addition game

TLM Name- Addition game
Subject- Maths
Class- Primary level
Material Required- Waste Pvc pannel, coloured sheets, marker, glue, scissors etc.

Learning Outcome:-
Students (class 1, 2) are able to learn addition up to number 15. This tlm is based on learning by doing concept.

Working on this **TLM** enhances student's understanding about addition the numbers. They enjoyed a lot and in play way method they finally learn the addition.

TLM Made by-
Dr. Neetu Shukla (HT)
Model P. S. Bethar 1
Block- Sikanderpur karn
District- Unnao
State- Uttar Pradesh

फिल्टर

शिक्षण संवाद

प्रा.वि. पल्टा, चिलकहर, बलिया, में कक्षा–४ के बच्चों कों गंदे पानी को निस्पंदन क्रिया के द्वारा स्वच्छ करते दिखाया गया ।

इस क्रिया में शून्य लागत में कबाड़ और प्राकृतिक संसाधनों से ही फिल्टर तैयार किया गया।

फिल्टर तैयार होने के बाद बच्चों को गंदे पानी को साफ करने की प्रक्रिया समझायी गई। फिर बच्चों ने सबसे ऊपर गिलास में गंदा पानी डाला, वह गंदा पानी बजरी और बालू से होता हुआ, अंत में साफ होकर निकला, जिसे देखकर बच्चे बहुत खुश हुए । उनकी मेहनत रंग लायी ।

पर्यावरण पाठ–११
जल ही जीवन है

दिव्या पूरी
(प्र.प्र.अ)
प्रा.वि. पल्टा चिलकहर,
बलिया (उ.प्र.)

नौकरी और घर के बीच सामंजस्य संघर्ष, संतुलन और सफलता

शिक्षण संवाद

"एक शिक्षित महिला केवल एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि पूरे समाज को शिक्षित करती है।"
– डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन

महिलाएँ शिक्षक समाज की वह सशक्त कड़ी हैं, जो घर और विद्यालय–दोनों की धुरी हैं। वे सुबह घर की ज़िम्मेदारियों से दिन की शुरुआत करती हैं और विद्यालय में विद्यार्थियों का भविष्य संवारती हैं। इन दोनों के बीच संतुलन बनाना उनके लिए एक चुनौती भी है और उपलब्धि भी।

महिला शिक्षकों के सामने सबसे बड़ी कठिनाई समय का संतुलन है। घर के कार्य, बच्चों की देखभाल, विद्यालय की तैयारी, निर्वाचन कार्य, बोर्ड परीक्षा, कॉपियाँ जाँचना आदि कार्यो को समय से करना किसी चुनौती से कम नहीं है।

"सफलता का रहस्य सही समय पर सही निर्णय लेने में है।" – स्वामी विवेकानन्द

जो शिक्षिकाएँ समय का नियोजन करती हैं, वे इन ज़िम्मेदारियों को सहजता से निभा लेती हैं। महिलाओं को मानसिक और भावनात्मक दबाव भी झेलना पड़ता है, क्योंकि हर व्यक्ति की उनसे अलग–अलग अपेक्षाएँ होती हैं। घर में परिवार को उम्मीद होती है कि वे हर जिम्मेदारी पूरी निष्ठा से निभाएँ, बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों का ध्यान, घरेलू कार्यों का संचालन। वहीं कार्यस्थल पर उनसे पूर्ण समर्पण, समय की पाबंदी और उत्कृष्ट प्रदर्शन की अपेक्षा की जाती है।

इन विविध अपेक्षाओं के बीच संतुलन बनाना आसान नहीं होता। कई बार वे स्वयं की इच्छाओं और आवश्यकताओं को पीछे छोड़ देती हैं, जिससे मानसिक थकान और भावनात्मक तनाव बढ़ जाता है। ऐसी परिस्थिति में परिवार का सहयोग, संवेदनशील कार्य, वातावरण और सकारात्मक संवाद अत्यंत आवश्यक है, ताकि महिलाएँ बिना अनावश्यक दबाव के अपनी ज़िम्मेदारियाँ संतुलित ढंग से निभा सकें।

विद्यालय में अनुशासन बनाए रखना और घर में स्नेहपूर्ण वातावरण बनाए रखना–दोनों ही अलग प्रकार की भूमिकाऐं हैं। कई बार थकान, तनाव और अपेक्षाएँ मन पर बोझ डाल देती हैं।

"आप वही बनते हैं जो आप सोचते हैं।" – महात्मा गाँधी

सकारात्मक सोच और आत्मबल ही महिला शिक्षकों की सबसे बड़ी ताकत है। समाज अक्सर यह मान लेता है कि घर की ज़िम्मेदारी महिला की ही है, चाहे वह नौकरी

करे या नहीं। परंतु बदलते समय में परिवार का सहयोग और ज़िम्मेदारियों का समान बँटवारा अत्यंत आवश्यक है।

"नारी शक्ति ही समाज की सच्ची शक्ति है।" – इन्दिरा गाँधी

भारत की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले ने सामाजिक विरोध और पारिवारिक दायित्वों के बीच संतुलन बनाकर शिक्षा का दीप जलाया। वे घर और समाज दोनों में संघर्ष करते हुए भी अपने लक्ष्य से नहीं डिगीं। आधुनिक समय में अनेक सरकारी विद्यालयों की शिक्षिकाएँ अपने छोटे बच्चों और बुज़ुर्गों की देखभाल करते हुए दूर–दराज़ के विद्यालयों में पढ़ाने जाती हैं। वे सीमित संसाधनों में भी उत्कृष्ट परिणाम लाती हैं।

– सामंजस्य के सूत्र
– समय का सुनियोजित प्रबंधन
– परिवार का सहयोग
– आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच
– स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान

"शिक्षक कभी साधारण नहीं होता, प्रलय और निर्माण उसकी गोद में पलते हैं।"– चाणक्य

महिला शिक्षकों के लिए विशेष सुविधाओं की आवश्यकता होती है। महिला शिक्षक समाज की रीढ़ हैं। वे घर और विद्यालय दोनों की ज़िम्मेदारियाँ समान निष्ठा से निभाती हैं। ऐसे में यह अत्यंत आवश्यक है कि उन्हें कुछ विशेष सुविधाएँ सहजता और सम्मान के साथ प्रदान की जाएँ, ताकि वे बिना मानसिक दबाव के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें।

सबसे पहले, सीसीएल, मेडिकल अवकाश, तथा मासिक धर्म अवकाश जैसी सुविधाएँ महिलाओं को सरल प्रक्रिया के माध्यम से उपलब्ध कराई जानी चाहिए। ये सुविधाएँ कोई विशेष अनुग्रह नहीं, बल्कि उनके स्वास्थ्य और पारिवारिक दायित्वों को ध्यान में रखते हुए आवश्यक व्यवस्था हैं। यदि महिला शिक्षिका मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगी, तो वे विद्यालय में भी अधिक समर्पण और एकाग्रता से कार्य कर सकेंगी।

इसके साथ ही यह भी अपेक्षित है कि अधिकारियों द्वारा महिला शिक्षकों की दूर–दराज़ के विद्यालयों में अनावश्यक तैनाती से यथासंभव परहेज़ किया जाए। जिन शिक्षिकाओं के छोटे बच्चे या पारिवारिक दायित्व अधिक हैं, उन्हें घर के समीप या सुलभ स्थान पर पदस्थापना देने का प्रयास होना चाहिए। इससे वे यात्रा की थकान और असुरक्षा की चिंता से मुक्त होकर अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकेंगी।

स्थानांतरण नीति में भी महिलाओं को विशेष प्राथमिकता मिलनी चाहिए, विशेषकर उन परिस्थितियों में जहाँ पारिवारिक या स्वास्थ्य संबंधी कारण हों। यह केवल सहानुभूति

का विषय नहीं, बल्कि प्रशासनिक संवेदनशीलता और मानवीय दृष्टिकोण का प्रश्न है। अंततः जब एक महिला शिक्षिका को सम्मान, सुरक्षा और आवश्यक सुविधाएँ मिलती हैं, तब वह घर और विद्यालय दोनों स्थानों पर अपनी भूमिका को अधिक प्रभावी ढंग से निभा पाती है।

समाज और प्रशासन दोनों का दायित्व है कि वे महिला शिक्षकों के योगदान को समझें और उन्हें वह सहयोग प्रदान करें जिसकी वे वास्तव में अधिकारी हैं। सशक्त शिक्षिका ही सशक्त समाज का निर्माण करती है। निष्कर्षतः महिला शिक्षकों के जीवन में संघर्ष अवश्य हैं, परंतु वे इन संघर्षों को सफलता की सीढ़ी बना लेती हैं। घर और नौकरी के बीच संतुलन बनाकर वे यह सिद्ध करती हैं कि नारी केवल परिवार की आधारशिला ही नहीं, बल्कि समाज की निर्माता भी है।

अंत में यही कहना उचित होगा–

"जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं से प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है।"

शशि द्विवेदी
(सहायक अध्यापक)
प्राथमिक विद्यालय छित्तमपुर
चोलापुर, वाराणसी

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी के विचार

शिक्षण संवाद

छायावाद के प्रमुख स्तंभ और 'महाप्राण' के रूप में विख्यात सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी के विचार साहस, संघर्ष और मानवतावाद से ओतप्रोत हैं। उनके साहित्य और जीवन दर्शन से प्रेरित प्रेरणादायक सद् विचारः–

– 'जिसने संघर्ष नहीं किया, उसने जीवन का वास्तविक स्वाद ही नहीं चखा।'

– 'मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति उसका आत्मविश्वास है। यदि वह अडिग है, तो कोई भी बाधा उसे रोक नहीं सकती।'

– 'साहित्य केवल मनोरंजन की वस्तु नहीं है, बल्कि वह समाज को जगाने और उसे नई

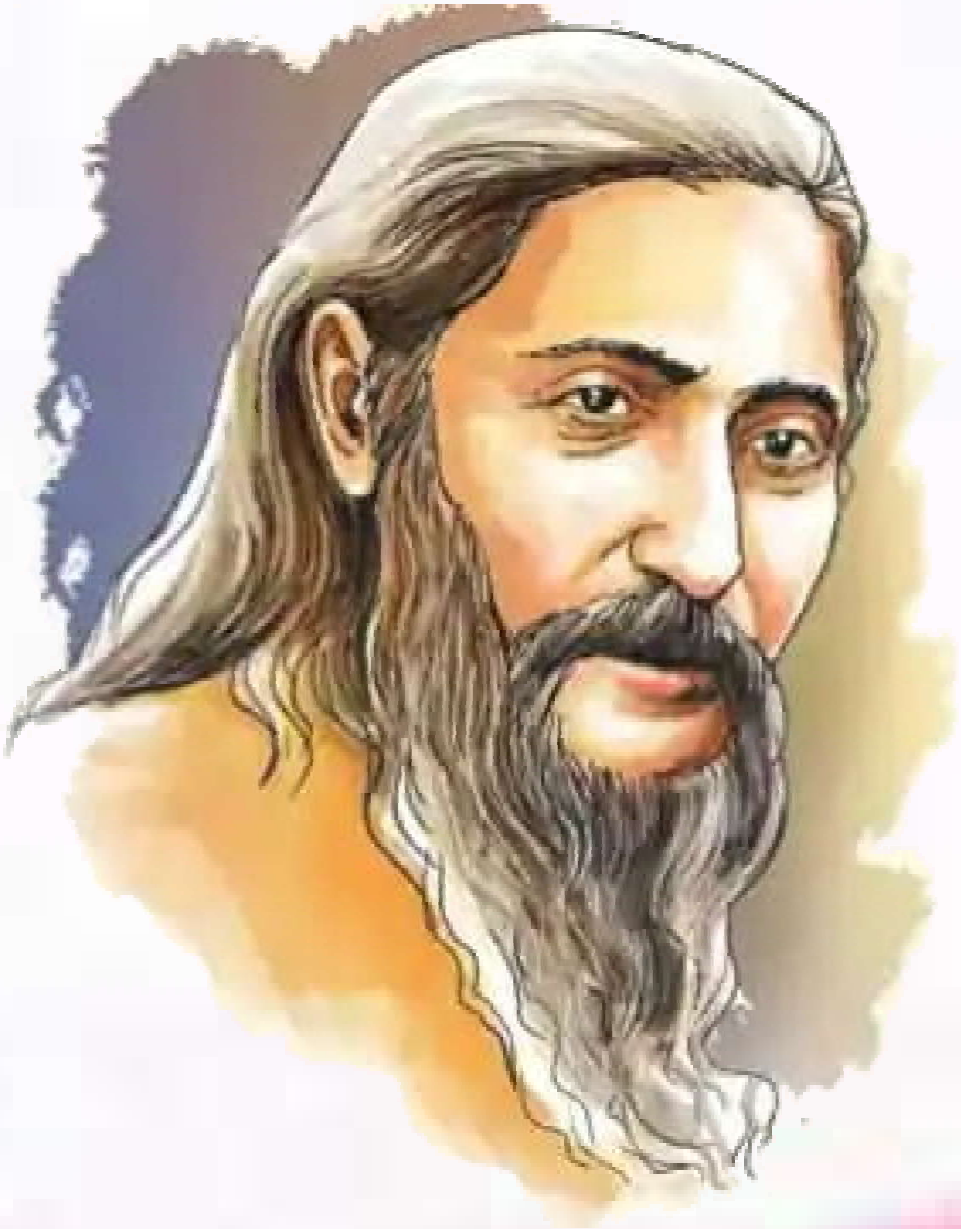

दिशा देने का सशक्त माध्यम है।'

– 'सत्य के मार्ग पर चलने के लिए साहस की आवश्यकता होती है, और वही व्यक्ति वीर है जो कठिन परिस्थितियों में भी सत्य का साथ न छोड़े।'

– 'मनुष्य की पहचान उसके धन या पद से नहीं, बल्कि उसके उन कार्यों से होती है जो उसने मानवता की भलाई के लिए किए हों।'

– 'परिवर्तन संसार का नियम हैय पुराने बंधनों को तोड़कर ही नई चेतना का उदय संभव है।'

– 'अज्ञानता अंधकार के समान है, जिसे केवल शिक्षा और निरंतर सीखने की ललक से ही दूर किया जा सकता है।'

– 'प्रकृति हमें धैर्य और निस्वार्थ भाव से देना सिखाती है, हमें भी अपने जीवन में इसी उदारता को अपनाना चाहिए।'

– 'दुःख मनुष्य को तोड़ते नहीं, बल्कि उसे भीतर से और अधिक मजबूत और परिपक्व बनाते हैं।'

– 'सच्ची प्रगति वही है जहाँ समाज के अंतिम व्यक्ति को भी न्याय और सम्मान मिले।'

निष्कर्षः– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' के विचारों का निष्कर्ष यह है कि 'जीवन की सार्थकता संघर्षों से भागने में नहीं, बल्कि उनका सामना करते हुए अपनी मौलिकता बनाए रखने में है।' उनका साहित्य हमें सिखाता है कि अभावों और आँसुओं के बीच भी एक मनुष्य अपनी रचनाधर्मिता और स्वाभिमान को जीवित रख सकता है। निराला जी का व्यक्तित्व 'अकेला' होकर भी 'अपराजेय' रहने की कला सिखाता है। आज के समय में, जब बच्चे या युवा छोटी–सी असफलता से निराश हो जाते हैं, तब निराला जी का जीवन–दर्शन उन्हें वज्र जैसी मजबूती और वसंत जैसी कोमलता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

नरेन्द्र नाथ पटेल (स. अ.)
कम्पोज़िट विद्यालय सुरहन
वि.ख. व जनपद – भदोही

छत्रपति शिवाजी

शिक्षण संवाद

छत्रपति शिवाजी महाराज भारतीय इतिहास के महान वीर, कुशल प्रशासक और आदर्श राष्ट्रनायक थे। छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी 1630 को शिवनेरी किला में हुआ था। उनके पिता शाहाजी भोंसले और माता जीजाबाई थीं। बचपन से ही जीजाबाई ने उन्हें धर्म, साहस और देशभक्ति की शिक्षा दी। उनका जीवन साहस, दूरदर्शिता, न्यायप्रियता और मातृभूमि के प्रति समर्पण का अद्‌भुत उदाहरण है। छत्रपति शिवाजी महाराज अपनी वीरता, कुशल नेतृत्व और आदर्श शासन व्यवस्था के कारण प्रसिद्ध हुए। उन्होंने मुगलों और अन्य अत्याचारियों के विरुद्ध संघर्ष करके मराठा साम्राज्य की स्थापना की और जनता को न्यायपूर्ण शासन दिया। शिवाजी महाराज अपनी दूरदर्शिता, गुरिल्ला युद्ध नीति, प्रजा के प्रति प्रेम और नारी सम्मान के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। उन्होंने छोटे–छोटे किलों और मजबूत सेना के बल पर एक शक्तिशाली राज्य का निर्माण किया। उनके साहस, देशभक्ति और उच्च आदर्शों के कारण वे भारतीय इतिहास में एक महान वीर और प्रेरणास्रोत के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनके जीवन से अनेक प्रेरक प्रसंग मिलते हैं, जो हमें साहस, नीति और मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ाते हैं।

प्रेरक प्रसंग –

शिवाजी महाराज के जीवन का एक अत्यंत प्रसिद्ध प्रेरक प्रसंग उनकी उदारता और नारी सम्मान से जुड़ा है। कहा जाता है कि एक बार उनके सैनिक युद्ध के बाद शत्रु पक्ष के एक सूबेदार की सुंदर बहू को बंदी बनाकर शिवाजी महाराज के सामने ले आए। सैनिकों ने सोचा कि महाराज प्रसन्न होंगे, क्योंकि उस समय युद्ध में इस प्रकार की घटनाएँ आम मानी जाती थीं। लेकिन जब शिवाजी महाराज को यह बात पता चली तो वे बहुत क्रोधित हुए। उन्होंने तुरंत उस महिला को सम्मानपूर्वक मुक्त करने का आदेश दिया और सैनिकों को कड़ा संदेश दिया कि किसी भी स्त्री का अपमान करना मराठा सेना की मर्यादा के विरुद्ध है। शिवाजी महाराज ने उस महिला को अपनी माता के समान सम्मान देते हुए कहा कि "यदि मेरी माता भी इतनी ही सुंदर होतीं, तो शायद मैं भी इतना ही सुंदर होता।" यह सुनकर वहाँ उपस्थित सभी लोग भावुक हो गए। इसके बाद उन्होंने उस महिला को

पूरे सम्मान के साथ उसके परिवार के पास सुरक्षित पहुँचाने की व्यवस्था करवाई। इस घटना से यह स्पष्ट होता है कि शिवाजी महाराज केवल महान योद्धा ही नहीं, बल्कि उच्च चरित्र और महान विचारों वाले शासक भी थे।

प्रस्तुत प्रसंग से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सच्चा वीर वही होता है जो शक्ति के साथ–साथ सदाचार और मानवीय मूल्यों का भी पालन करे। शिवाजी महाराज ने अपने जीवन से यह सिद्ध किया कि वीरता का अर्थ केवल युद्ध जीतना नहीं, बल्कि न्याय, धर्म और मानवता की रक्षा करना भी है। उनका जीवन आज भी युवाओं और समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

रविन्द्र कुमार पटेल (स. अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय झौआ
वि.ख. – औराई, जनपद – भदोही

विज्ञान दिवस

विज्ञान हमें सही राह दिखाता,
ज्ञान का दीप जलाता है।
अंधविश्वास के अंधेरों में,
सच्चाई का सूरज लाता है।

रॉकेट लेकर नभ में पहुँचे,
समुद्र की गहराई भी नापी।
नई खोज से जीवन बदला,
मानव ने हर सीमा झांकी।

बिजली, दवा और कंप्यूटर,
सब विज्ञान की देन हैं।
सुख–सुविधा से भरा जग सारा,
इसके ही वरदान हैं।

आओ मिलकर प्रण हम लें,
ज्ञान का दीप जलाएँगे।
सत्य, तर्क और प्रयोगों से,
नया भविष्य बनाएँगे।

अंजू लता पटेल (स. अ.)
पी.एम.श्री उच्च प्राथमिक विद्यालय करसड़ा
वि.ख.– मझवां, जनपद – मीरजापुर

नन्ही सखी गौरैया

ओ नन्ही गौरैया प्यारी,
तुम लगती हो सबसे न्यारी।
मेरे आंगन में तुम आओ न,
फुदक फुदक कर नाचो गाओ न।
तिनका तिनका चुनकर लाती,
सुंदर सा घोंसला बुनकर बनाती।
छोटी चोंच से दाना लाती,
पंख फैलाकर गगन में उड़ती।
20 मार्च हमें याद दिलाता,
गौरैया दिवस सभी जन मनाता।
दाना पानी का प्रबंध कराता,
एक प्रण से सब गौरैया बचाता।

रचना–
मीरा रविकुल प्र०अ०
प्राथमिक विद्यालय कतरावल –1
विवक्षेत्र– बडोखर खुर्द जनपद– बांदा

दैनिक जीवन में विज्ञान

दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।
रोटी–कपड़ा या हो मकान,
हर जगह पहुंच गया विज्ञान।

बना मोटरगाड़ी, रेल, विमान,
आवागमन कर दिया आसान।
शिक्षा, चिकित्सा और सुरक्षा,
सबमें इसका योगदान।
दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।

आधुनिक कृषि उपकरणों से,
कृषि कार्य हुआ आसान।
बड़े–बड़े कामों को भी,
पल में देता ये अंजाम।
दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।

विद्युतबल्ब, ट्यूबलाइट से,
रौशन हुआ जग–संसार।
रेडियो, टीवी और मोबाइल,
करा रहे मनोरंजन अपार।
दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।

टेलीफोन और मोबाइल से,
संवाद हुआ बड़ा आसान।
कंप्यूटर और लैपटॉप से,
निपट रहा पल में अब काम।
दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।

फैला जबसे अंतराजाल,
संदेश भेजना हुआ आसान।
विज्ञान ने खोले उन्नति के द्वार
चाँद पर पहुंचा गया इंसान।
दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।

जिधर देखो, उधर विज्ञान,
कर रहा है काम आसान।
लगता था जो स्वप्न समान,
देखो अब हो गया साकार।
दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।

हर समस्या का मिला निदान,
जीवन हुआ बड़ा आसान।
दैनिक जीवन में विज्ञान,
कर रहा है बड़ा कमाल।

सुनील कुमार
(विज्ञान शिक्षक)
संविलयन विद्यालय अड़गोड़वा, विकास क्षेत्र–मिहींपुरवा
जनपद– बहराइच, उत्तर प्रदेश। मोबाइल नंबर 6388172360

‘कहानी का पासा’

(Story Dice)

कक्षा– 5 विषय– हिन्दी

यह एक बहुत ही दिलचस्प और कम लागत वाला (**Low-cost**) नवाचार है, जो कक्षा 5 के बच्चों में न केवल पठन कौशल बल्कि उनकी कल्पनाशीलता और अभिव्यक्ति को भी निखारता है। इसे लागू करने का विस्तृत तरीका निम्न प्रकार है:

1. आवश्यक सामग्री (**TLM**)–

गत्ते के 2–3 खाली डिब्बे (जैसे चौक के डिब्बे या अन्य किसी वस्तु के गत्ते के खाली डिब्बे)।

सफेद कागज और स्केच पेन।

कक्षा 5 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक ‘वाटिका’।

2. तीन पासे तैयार करना– पासे के छह फलकों पर आप अलग–अलग चीजें लिख सकते हैं या चित्र चिपका सकते हैं।

पासा 1 (पात्र)– राजा, किसान, जादुई चिड़िया, चालाक लोमड़ी, सिपाही, परी।

पासा 2 (स्थान)– घना जंगल, पुराना किला, नदी का किनारा, स्कूल, मेला, बाजार।

पासा 3 (समस्या/घटना)– रास्ता भटक जाना, खजाना मिलना, तेज बारिश, दोस्ती टूटना,

लड़ाई जीतना, ईनाम मिलना।

3. क्रियान्वयन की प्रक्रिया (**Step-by-Step**)-

चरण 1– समूह विभाजन– कक्षा के बच्चों को 4–5 के समूहों में बाँट दें।

चरण 2– पासा फेंकना– प्रत्येक समूह का एक प्रतिनिधि आकर तीनों पासों को फेंकेगा। मान लीजिए, पासे में आयारू 'किसान' (पात्र), 'मेला' (स्थान) और 'ईनाम मिलना' (घटना)।

चरण 3– कहानी निर्माण और लेखन– अब उस समूह के बच्चों को इन तीन शब्दों के इर्द–गिर्द एक छोटी कहानी बुननी होगी। वे अपनी किताब के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग कर सकते हैं।

चरण 4– 'पठन' का मुख्य हिस्सा– कहानी लिखने के बाद, समूह का एक बच्चा पूरी कक्षा के सामने आकर उस स्वरचित कहानी को धाराप्रवाह (**Fluency**) और उचित हाव–भाव के साथ पढ़ेगा।

चरण 5– चर्चाः– अन्य बच्चे कहानी सुनने के बाद उस पर प्रश्न पूछेंगे, जिससे उनकी समझ (**Comprehension**) विकसित होगी।

4. इस नवाचार के लाभ–

पठन में रुचि– जब बच्चा अपनी खुद की बनाई कहानी पढ़ता है, तो उसका आत्मविश्वास और पढ़ने के प्रति लगाव बढ़ जाता है।

शब्द भंडार– कहानी बुनते समय बच्चे नए शब्दों की खोज करते हैं और शिक्षक की मदद लेते हैं।

रचनात्मकता– यह बच्चों को रटने के बजाय सोचने (**Creative Thinking**) पर मजबूर करता है।

सहयोग- समूह में काम करने से बच्चों में टीम वर्क की भावना आती है।

शिक्षक के लिए सुझाव–

आप पाठ्यपुस्तक के किसी कठिन पाठ (जैसे– 'श्रवण कुमार') को पढ़ने के बाद, उस पाठ के मुख्य पात्रों और घटनाओं को पासे पर लिखकर बच्चों से कहानी का पुनर्निर्माण (**Re-telling**) करवा सकते हैं।

जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
पी० एम० श्री प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर– 1
विकास क्षेत्र व जनपद– बागपत

३डी एनीमेशन

शिक्षण संवाद

यह एक ऐसी तकनीक है जिसमें डिजिटल वातावरण में त्रि–आयामी (**Three-dimensional**) गतिशील चित्र बनाए जाते हैं। साधारण 2डी चित्रों (जैसे कागज पर बना चित्र) के विपरीत, 3डी मॉडल में लंबाई, चौड़ाई और गहराई तीनों होती हैं, जिससे वे बिल्कुल असली और जीवंत लगते हैं। शिक्षण में इसका प्रयोग बच्चों के सीखने के अनुभव को क्रांतिकारी बना सकता है।

जटिल विषयों का सरलीकरण– विज्ञान के कठिन विषय, जैसे कि मानव शरीर के अंगों की कार्यप्रणाली (धड़कता हुआ दिल) या सौर मंडल की गति, 3डी एनीमेशन के जरिए आसानी से समझाई जा सकती हैं। बच्चे देख सकते हैं कि चीजें अंदर से कैसे काम करती हैं।

अदृश्य को दृश्य बनाना– परमाणु (**Atoms**), सूक्ष्म जीव या पृथ्वी की आंतरिक परतों जैसी चीजें जिन्हें नग्न आंखों से नहीं देखा जा सकता, उन्हें 3डी में दिखाकर बच्चों की कल्पना शक्ति को हकीकत से जोड़ा जा सकता है।

इतिहास को जीवंत करना, इतिहास की किताबों में केवल चित्र होते हैं, लेकिन 3डी

एनीमेशन के माध्यम से हड़प्पा सभ्यता या पुराने किलो को 'पुनर्जीवित' किया जा सकता है, जिससे बच्चे उस कालखंड को महसूस कर सकें।

सुरक्षित प्रयोग– रसायन विज्ञान (**Chemistry**) के खतरनाक प्रयोगों को प्रयोगशाला में करने से पहले 3डी सिमुलेशन के जरिए दिखाकर जोखिम कम किया जा सकता है।

रुचि और एकाग्रता– रंगीन और चलते–फिरते 3डी मॉडल बच्चों का ध्यान लंबे समय तक खींच कर रखते हैं, जिससे 'रटने' के बजाय 'समझने' की प्रवृत्ति बढ़ती है।

3डी एनीमेशन बनाने की प्रक्रिया को दो तरीकों से समझा जा सकता है। एक पारंपरिक पेशेवर तरीका (**Professional Pipeline**) और दूसरा आधुनिक एआई (ए.आई.) तरीका, जो आजकल शिक्षकों और बच्चों के लिए बहुत आसान हो गया है।

1. पारंपरिक 3डी एनीमेशन के चरण (**Step-by-Step**)

एक पेशेवर 3डी वीडियो बनाने में मुख्य रूप से ये चरण शामिल होते हैं– स्टोरीबोर्डिंग (**Storyboarding**)– सबसे पहले कहानी को चित्रों के माध्यम से कागज या डिजिटल बोर्ड पर उतारा जाता है ताकि पता रहे कि कौन सा सीन कैसा दिखेगा।

मॉडलिंग (**3D Modeling**)– कंप्यूटर सॉफ्टवेयर (जैसे **Blender**) की मदद से डिजिटल मिट्टी की तरह पात्रों (**Characters**) और वस्तुओं का ढांचा बनाया जाता है।

टेक्सचरिंग (**Texturing**)– इन मॉडलों पर रंग, चमक और बनावट (जैसे खाल या कपड़े) डाली जाती है।

रिगिंग (**Rigging**)– यह सबसे महत्वपूर्ण हैय मॉडल के अंदर एक 'डिजिटल कंकाल' फिट किया जाता है ताकि उसे हिलाया–डुलाया जा सके।

एनीमेशन (**Animation**)– रिग किए गए मॉडल को अलग–अलग पोज में रखकर उसे गति दी जाती है।

लाइटिंग और रेंडरिंग (**Lighting & Rendering**)– सीन में रोशनी सेट की जाती है और फिर कंप्यूटर उसे प्रोसेस करके एक फाइनल वीडियो फाइल में बदल देता है।

नीलम रानी (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय निबाली (1–8)
बागपत, बागपत

रुमाल झपट्टा

रुमाल झपट्टा (जिसे 'रुमाल छू' भी कहा जाता है)

यह भारत का एक बहुत ही लोकप्रिय और स्फूर्तिदायक पारंपरिक खेल है। यह खेल एकाग्रता, गति और चपलता (**agility**) पर आधारित है।

इसका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है–

1. खिलाड़ियों की संख्या – न्यूनतम खिलाड़ी 8 (4–4 की टीम)। आदर्श संख्या– 10 से 20 खिलाड़ी। दोनों टीमों में खिलाड़ियों की संख्या बराबर होनी चाहिए।

2. खेल का मैदान और तैयारी – मैदान के बीचों–बीच एक छोटा घेरा (**Circle**) बनाया जाता है। उस घेरे में एक रुमाल (या कोई कपड़ा) रख दिया जाता है।

घेरे के दोनों ओर समान दूरी पर (लगभग 10–15 फीट दूर) दो समानांतर रेखाएं खींची जाती हैं। दोनों टीमें अपनी–अपनी रेखा के पीछे खड़ी होती हैं।

3. खेलने की विधि – नंबर देना– दोनों टीमों के खिलाड़ियों को क्रमवार नंबर दिए जाते हैं (जैसे 1 से 10)। मान लीजिए, टीम 1 के पास 1–10 नंबर हैं, तो टीम 2 के पास भी 1–10 नंबर होंगे।

पुकार (**Call**)– एक रेफरी या निर्णायक बीच में खड़े होकर कोई भी एक नंबर पुकारता है (जैसे– 'नंबर 5')।

मुकाबला– पुकारे गए नंबर वाले दोनों टीमों के खिलाड़ी (दोनों तरफ़ के नंबर 5) तेज़ी से दौड़कर बीच वाले घेरे के पास आते हैं।

दांव–पेच– दोनों खिलाड़ी रुमाल के चारों ओर मंडराते हैं। लक्ष्य यह होता है कि रुमाल उठाकर अपनी टीम की रेखा की ओर भागना है।

अगर आप रुमाल उठाकर अपनी लाइन पार कर लेते हैं बिना विपक्षी द्वारा छुए (**Tag**), तो आपकी टीम को एक अंक मिलता है। लेकिन, अगर रुमाल उठाने के बाद विपक्षी खिलाड़ी आपको छू लेता है, तो अंक सामने वाली टीम को मिल जाता है।

सावधानी– रुमाल उठाने से पहले कोई किसी को छू नहीं सकता। खिलाड़ी एक–दूसरे को छकाने के लिए हाथ हिलाने या झपट्टा मारने का नाटक करते हैं।

4. खेल के नियम –

खिलाड़ी को रुमाल उठाकर अपनी सीमा (**Starting line**) तक सुरक्षित पहुँचना होता है। घेरे के अंदर पैर रखना अक्सर वर्जित होता है (नियमों के अनुसार बदला जा सकता है)। जो टीम अंत में सबसे ज्यादा अंक बनाती है, वह विजयी होती है। यह खेल बच्चों की प्रतिक्रिया समय (**Response time**) और निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है।

अनीता राठी (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय चौहल्दा
बागपत, बागपत

वृश्चिकासन
(Scorpion Pose)

शिक्षण संवाद

वृश्चिकासन योग का एक उन्नत (**Advanced**) आसन है, जिसमें शरीर बिच्छू (**Scorpion**) की आकृति जैसा दिखाई देता है। यह आसन संतुलन, लचीलापन और शक्ति का उत्कृष्ट संयोजन है।

वृश्चिकासन करने की प्रक्रिया

1. प्रारंभिक स्थिति – सबसे पहले दीवार के सहारे शीर्षासन (**Headstand**) या फोरआर्म स्टैंड (**Pincha Mayurasana**) में आएँ। शुरुआती लोग दीवार का सहारा लें।

2. संतुलन बनाना – अपने दोनों पैरों को धीरे–धीरे ऊपर की ओर सीधा रखें। शरीर का पूरा भार हाथों (या सिर और हाथों) पर संतुलित करें।

3. पीठ मोड़ना – अब धीरे–धीरे घुटनों को मोड़ें। पैरों को सिर की ओर लाने का प्रयास करें। कमर और पीठ को पीछे की ओर मोड़ें (**Backbend** करें)।

4. अंतिम अवस्था – पैरों को सिर के जितना पास ला सकें, लाएँ। छाती को आगे की ओर और गर्दन को थोड़ा ऊपर उठाएँ। शरीर बिच्छू की आकृति जैसा दिखेगा।

Step 1: शुरुआत (बाल आसन) Step 2: तैयारी (डॉल्फिन पोज़) Step 3: संतुलन (पिंचा मयूरासन) Step 4: पीछे मुड़ना Step 5: पूर्ण वृश्चिकासन

5. वापस आना – धीरे–धीरे पैरों को सीधा करें। सावधानीपूर्वक सामान्य स्थिति में लौट आएँ।

वृश्चिकासन के लाभ

1. शारीरिक लाभ – मांसपेशियों को मजबूत बनाता है – कंधे, हाथ, पीठ और कोर मजबूत होते हैं।

रीढ़ की लचीलापन बढ़ाता है – **Backbend** से स्पाइन **flexible** बनती है।

संतुलन क्षमता बढ़ाता है – शरीर का नियंत्रण बेहतर होता है।

रक्त संचार सुधारता है – उल्टा रहने से मस्तिष्क में रक्त प्रवाह बढ़ता है।

2. मानसिक लाभ

एकाग्रता बढ़ाता है – ध्यान और संतुलन के कारण **focus** बढ़ता है। तनाव कम करता है – **nervous system** को शांत करता है।

3. अन्य लाभ

फेफड़ों की क्षमता बढ़ती है। ऊर्जा स्तर (**Energy level**) बढ़ाता है

सावधानियाँ

यह एक कठिन आसन है, इसलिए योग गुरु के मार्गदर्शन में ही करें। यदि आपको गर्दन, पीठ, कंधे या हृदय संबंधी समस्या है, तो इसे न करें। शुरुआत में दीवार का सहारा अवश्य लें। झटके से न करें, धीरे–धीरे अभ्यास करें।

निष्कर्ष

वृश्चिकासन एक शक्तिशाली और आकर्षक योगासन है, जो शरीर और मन दोनों को संतुलित करता है। नियमित अभ्यास से यह न केवल शारीरिक ताकत बढ़ाता है बल्कि आत्मविश्वास और मानसिक शांति भी प्रदान करता है।

गीता रानी (स०अ०)
पी० एम० श्री प्राथमिक विद्यालय धनौरा
सिल्वर नगर न०1 बागपत, बागपत

बूंग

एक बच्चे की नजर से सामाजिक और मानवीय समस्याओं की संवेदनशील झलक

बच्चों और परिवार से जुड़ी फिल्मों की श्रेणी में ब्रिटिश एकेडमी फिल्म पुरस्कार से सम्मानित फिल्म बूंग अपनी सादगी भरी कहानी के माध्यम से कई सामाजिक और मानवीय मुद्दों को सामने लाती है।

निर्देशन–

निर्देशक लक्ष्मीप्रिया देवी की यह फिल्म पानी में बहते पत्ते की तरह महसूस होती है, जो एक साथ भीगा हुआ भी लगता है और सूखा भी। बड़े सामाजिक मुद्दों को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने किसी अत्यधिक नाटकीय शैली का सहारा नहीं लिया, बल्कि बच्चों की मासूम और स्वाभाविक दृष्टि से कहानी को सामने रखा है। ऊपरी तौर पर यह एक छोटे शहर की कहानी प्रतीत होती है, लेकिन एक बच्चे की सरल खोज से शुरू होकर यह धीरे–धीरे भारत के उत्तर–पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्रों के जीवन की व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करती है।

अभिनय –

अभिनय की दृष्टि से फिल्म का केंद्र बिंदु बूंग का पात्र है, जिसे गुगुन किपगेन ने अत्यंत स्वाभाविक तरीके से निभाया है। उनकी शरारत, चंचलता और भावनात्मक अभिव्यक्ति फिल्म की सबसे बड़ी ताकत बन जाती है। मज़बूत इरादों वाली अकेली मां मंदाकिनी के पात्र को बाला हिजाम ने बड़ी संवेदनशीलता के साथ निभाया है। बूंग के मित्र राजू अग्रवाल की भूमिका अंगोम

सनामतुम ने निभाई है, जबकि राजू के पिता सुधीर अग्रवाल के रूप में विक्रम कोचर दिखाई देते हैं। इन पात्रों के बीच की दोस्ती और हल्की–फुल्की नोकझोंक फिल्म को और भी रोचक बना देती है।

फिल्म की कहानी –

फिल्म की कहानी इम्फाल में रहने वाले एक चंचल लेकिन संवेदनशील लड़के बूंग के इर्द–गिर्द घूमती है। बूंग अपनी अकेली मां मंदाकिनी के साथ रहता है और उनसे बेहद प्यार करता है। वह अपनी मां के अकेलेपन और संघर्ष को गहराई से महसूस करता है। उसके पिता एल. जॉयकुमार कई वर्ष पहले काम के सिलसिले में घर से गए थे और फिर कभी लौटकर नहीं आए। एक समय उनके निधन की खबर भी आती है, लेकिन माँ इसे स्वीकार नहीं करतीं। बूंग को विश्वास होता है कि उसके पिता अभी जीवित हैं। वह तय करता है कि वह उन्हें ढूंढकर वापस घर लाएगा ताकि उनका परिवार फिर से खुशहाल हो सके।

इस उद्देश्य में उसका साथ उसका करीबी मित्र राजू अग्रवाल देता है। दोनों मित्र एक रोमांचक यात्रा पर निकल पड़ते हैं और अंततः म्यांमार की सीमा की ओर पहुंच जाते हैं। इस यात्रा के दौरान कई प्रश्न सामने आते हैं, क्या बूंग के पिता वास्तव में जीवित हैं और क्या वह उन्हें वापस घर ला पाएगा। इन प्रश्नों के उत्तर इसी भावनात्मक और साहसिक यात्रा में धीरे–धीरे सामने आते हैं।

कैसी है यह फिल्म?

फिल्म बूंग को ब्रिटिश एकेडमी फिल्म पुरस्कार में बच्चों और परिवार की सर्वश्रेष्ठ फिल्म का सम्मान मिला है और यह इस श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय फिल्म बन गई। यह फिल्म केवल एक बच्चे या मां–बेटे की कहानी नहीं है। इसके भीतर राजनीतिक अस्थिरता, सीमावर्ती क्षेत्रों का तनाव, अलगाववादी आंदोलनों की पृष्ठभूमि, बाहरी लोगों का प्रश्न, अकेली मां की चुनौतियां और पुरुष–प्रधान समाज जैसी कई सामाजिक परतें मौजूद हैं। सबसे विशेष बात यह है कि इन गंभीर मुद्दों को बिना किसी शोर–शराबे या भाषणात्मक शैली के एक सरल और संवेदनशील कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

क्यों देखें?

संक्षेप में कहा जाए तो इस फिल्म को न देखने की कोई ठोस वजह नहीं बनती। मानवीय भावनाओं, सामाजिक यथार्थ और मासूम दोस्ती की सुंदर प्रस्तुति के कारण बूंग एक ऐसी फिल्म है जिसे अवश्य देखा जाना चाहिए।

अफज़ाल अहमद
(स०अ०)
पी एम श्री स्कूल सिविल लाइन्स
दबरई ब्लॉक एवं जनपद फिरोजाबाद

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप्प नम्बर—**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : **9458278429**
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

टीम मिशन शिक्षण संवाद